वैश्विक नियोग I

वैश्विक नियोग: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. परमेश्वर का उद्देश्य और उसकी योजना।

कक्षा #२:

II. इस्राएल का कर्तव्य, अवसर और उसका प्रतिउत्तर।

कक्षा #३:

III. इस्राएल, मसीह और राज्य।

कक्षा #४:

IV. नियोग और कलीसिया।

कक्षा #५:

V. संसार भर के मसीहियों का आन्दोलन।
परीक्षा।

वैश्विक नियोग I

टिप्पणियाँ -

वैश्विक नियोग १: परीक्षा

संभावित २० सूत्रीय प्रश्न

१) वर्णन करें कि बाइबल हमें किस प्रकार से संसार भर में सुसमाचार सुनाने का नमूना (उदारहण) प्रदान करती है (पृष्ठ ९४)।

२) इस्राएल के कर्तव्य, अवसर, और प्रतिउत्तर की शिक्षाओं पर एक संक्षिप्त सारांश प्रदान करें (पृष्ठ. १०५)।

३) इस बात को दर्शाने के लिए तीन घटनाओं का चयन करें कि यीशु की सेवकाई अन्यजातियों तक पहुंची (पृष्ठ १०८,१०९)।

४) परमेश्वर के राज्य के संदेश का वर्णन करने के लिए विजय के तीन बिन्दुओं का इस्तेमाल करें (पृष्ठ १११, ११२)।

५) नियोगियों अर्थात मिश्नरियों को किस प्रकार बाहर भेजा है दिखाने के लिए, प्रेरितों १३:१-४ और १४:२६,२७ का उपयोग करें (पृष्ठ ११६)।

६) प्रेरितों २६:१८ का इस्तेमाल करते हुए पौलुस के प्रचार करने के लिए तरीके का वर्णन करें (पृष्ठ ११७,११८)।

संभावित १० सूत्रीय प्रश्न

१) ऐतिहासिक रीति से, बाइबल के महत्व का विचार किस प्रकार से कलीसिया द्वारा संसार भर में किये जाने वाले सुसमाचार प्रचार के प्रयासों के साथ जुड़ा है (पृष्ठ ९२)।

२) दो या तीन वाक्यों में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें: अभी तक शैतान को काम करने की अनुमति क्यों प्रदान की हुई है? (पृष्ठ ९५)।

३) इतिहास में परमेश्वर के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, दो कार्यक्रमों, दो समस्याओं, तथा परमेश्वर की दो योजनाओं के बारे में बताएं (पृष्ठ ९९)।

४) संक्षेप में उस "अभिकेन्द्रित" अवसरों (आकर्षक शक्तियों) का वर्णन करें जो एक नियोगी राष्ट्र के रूप में इस्राएल के पास थे (पृष्ठ १०२, १०३)।

५) संक्षेप में वर्णन करते हुए एक उदाहरण दें किस परमेश्वर "अनिच्छुक" मिश्नरियों की राष्ट्रों में जाने में मदद करते हैं (पृष्ठ १०४, १०५)।

६) किसी तरह से यहूदियों ने परमेश्वर के राज्य को गलत समझा? (पृष्ठ १०६, १०७)।

७) परमेश्वर का राज्य कब आएगा? (पृष्ठ ११०)।

८) एक वाक्य में, परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार का नियोग बताएं। (पृष्ठ ११२)।

९) एक वाक्य में, परमेश्वर के राज्य के समुसमाचार का उद्देश्य बताएं (पृष्ठ ११३)।

१०) एक आरेख की सहायता से दिखाएं कि किस तरीके से प्रेरितों के काम १:८ में लिखी हुई बात पूरी हुई कि पूरी पुस्तक में देखा जा सकता है (पृष्ठ ११४)।

११) "प्रेरित" शब्द को परिभाषित करें (पृष्ठ ११७)।

१२) नियोग का प्रमुख लक्ष्य क्या है? (पृष्ठ ११९)।

वैश्विक नियोग I

टिप्पणियाँ –

वैश्विक नियोग के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला:

वैश्विक नियोग श्रृंखला में तीन पाठ्यक्रम हैं। ये योनातन लूइस द्वारा सम्पादित श्रृंखला पर आधारित और वहीं से लिए गए हैं। यह श्रृंखला स्पैनिश भाषा में उपलब्ध है और इसे विलियम कैरी लाइब्रेरी के प्रकाशक, पो.बॉ. संख्या ४०१२९, पासाडेना, CA (सीए) ९१११४ (८१८-७९८-०८१९) से मंगाया जा सकता है।

इन सामग्रियों को इस्तेमाल "अनुमति द्वारा" किया जा रहा है।
तीन वैश्विक नियोग के पाठ्यक्रम निम्नलिखित हैं:

१. वैश्विक नियोग I - बाइबल आधारित/ऐतिहासिक नींव[१]

२. वैश्विक नियोग II - योजनाबद्ध आयाम

३. वैश्विक नियोग III - विविध-संस्कृतियों का आयाम

I. परमेश्वर की योजना और उद्देश्य।

लेखक की टिप्पणी:

जब हम यूहन्ना ३:१६ के बारे में विचार करते हैं, हम इस वचन पर अपने व्यक्ति उद्धार को लेकर विचार करते हैं। लेकिन, इसमें यह सीधे तौर पर उद्धार की बड़ी योजना की ओर इंगित करता है। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया।" परमेश्वर की सम्पूर्ण मानवजाति के लिए यह योजना है कि वह यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को जानने पाए।

क. नियोग बाइबल का आधार है।

१. बाइबल परमेश्वर के नियोग की कहानी है। यह इतिहास है। (यह उनकी कहानी है!) नियोग के बिना बाइबल का कोई अस्तित्व नहीं है। बाइबल के बिना नियोग के लिए कोई निर्देश नहीं हैं। परमेश्वर का नियोग सारे संसार में सुसमाचार सुनाना है।

२. निम्नलिखित कारणों से बाइबल संसार भर में सुसमाचार सुनाने के लिए आवश्यक है:

वैश्विक नियोग I

टिप्पणियाँ –

क. बाइबल हमें सुसमाचार सुनाने की आज्ञा प्रदान करती है।

१) वैश्विक सुसमाचार प्रचार बाइबल में प्रारम्भ होता है।

२) वैश्विक सुसमाचार प्रचार के सन्दर्भ में बाइबल के महत्व को इतिहास में देखा जा सकता था।

क) कलीसिया के सम्पूर्ण इतिहास में नियोग का महत्व पूरी तरह से बदल गया है। जब कलीसिया बाइबल की सत्ता पर बल देती है, तब वह अधिक बल उसके नियोग पर भी देती है।

ख) कलीसिया के इतिहास में, इन दो चीज़ों के बीच में सीधा सम्बन्ध हैः

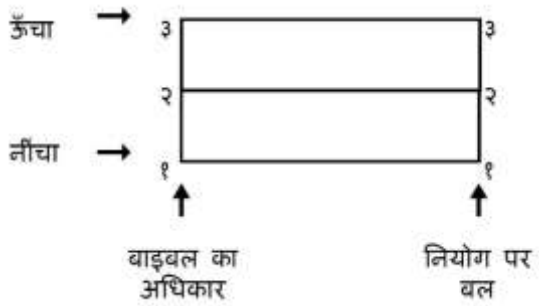

चर्चा विषय

सम्पूर्ण इतिहास में, यदि कलीसिया ने बाइबल के अधिकार को थोड़ा महत्व दिया (उदाहरण के लिए मानचित्र में दिखाए गए १ की कीमत), तब उसने नियोग को भी थोड़ा महत्व दिया (एक १ की कीमत)। यह सत्य क्यों है? क्योंकि सुसमाचार प्रचार करने की आज्ञा बाइबल में दी गयी है। यदि बाइबल को थोड़ा अधिकार दिया गया है, तब थोड़ा अधिकार आज्ञाओं को भी दिया गया है। इस सम्बन्ध के बारे में चर्चा करें।

ख. यह आज्ञा केवल मत्ती २८ अध्याय में ही नहीं है। हम उत्प.१२:१-३ से तक लेकर प्रकाशितवाक्य ७:९ हम नियोग की आज्ञा को देख सकते हैं।

ग. बाइबल हमें वैश्विक सुसमाचार के लिए संदेश देती है।

१) इस संदेश को सुसमाचार कहा जाता है। इसकी विषय वस्तु कभी नहीं बदलती है।

टिप्पणियाँ –

२) सुसमाचार को प्रस्तुत करने का तरीका बदल सकता है। प्रस्तुत करने का तरीका वहां की संस्कृति और श्रोताओं की विशेष आवश्यकता पर निर्भर करती है।

चर्चा विषय

निम्नलिख्ति आरेख का अध्ययन तथा उस पर चर्चा करें:

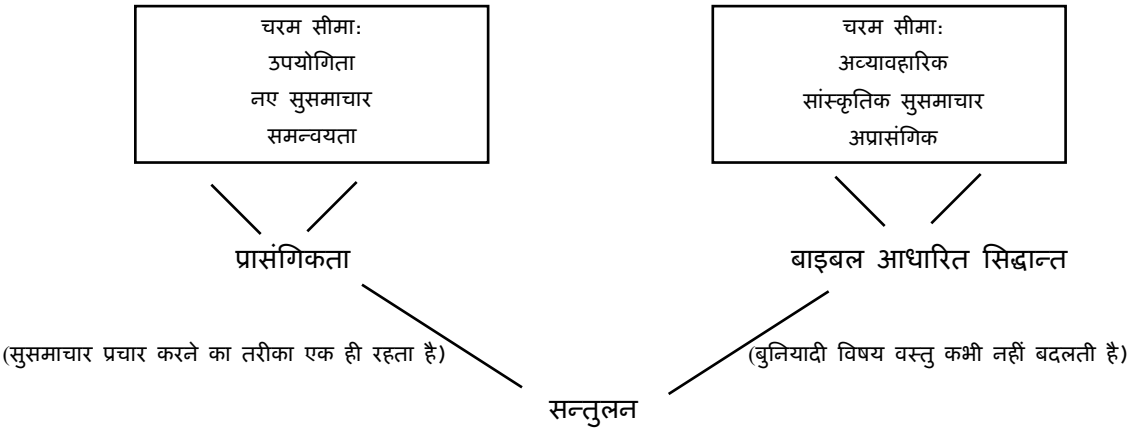

३) प्रासंगिकता विभिन्न संस्कृतियों में सुसमाचार को रोपित करने की प्रक्रिया है।

क) यह समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि सुसमाचार उत्तरी अमेरिकी या यूरोपीय नहीं है। सुसमाचार हर संस्कृति में ढल जाता है।

ख) हमें किसी विशेष समुदाय में सुसमाचार प्रस्तुत करने की तरकीब को सीख लेना चाहिए।

ग) हमें किसी भी तरफ की चरम सीमा की ओर जाए बिना इस काम को करना है।

(१) उपयोगिता- परिणाम ही तरीकों को निर्धारित करते हैं... इसका अर्थ है कि, मिश्नरियों के सामने प्रांसगिक होने की मज़बूरी इस हद तक बढ़ जाती है कि कई बार संदेश की विषय वस्तु बलिदान हो जाती है।

(२) अप्रासंगिता- अपने सिद्धान्तों को लेकर इतने भी कठोर न हो किसी जिसे सुसमाचार सुनाया जाए वह उसको अव्यावहारिक और अप्रांसगिक लगे।

४) सुसमाचार प्रचार में सन्तुलन होने सिद्धांत और प्रासंगिकता के बीच में सन्तुलन बनाना है। तरीका बदल जाता है लेकिन उसकी विषय वस्तु वैसी ही बनी रहती है।

टिप्पणियाँ -

घ. बाइलब हमें वैश्विक सुसमाचार प्रचार करने का नमूना प्रदान करती है।

१) यह नमूना हमें अवतरण (अर्थात परमेश्वर द्वारा मनुष्य का रूप धारण करने में) मिलता है। अवतरण में अपनी पहिचान खोए बिना दूसरे की पहिचान को धारित किया जाता है (यीशु शतप्रतिशत मनुष्य और शतप्रतिशत परमेश्वर थे। उनकी मानवता में, वह हमारे तुल्य बनें। उनकी ईश्वरीयता में, उन्होंने अपनी पहिचान को नहीं त्यागा)।

क) पहिचान बनाने का अर्थ लोगों के बीच में जाने के लिए हमें पहले उनके तुल्य बनना होगा। हमारे मन में उनके लिए तरस होना चाहिए (compassion (कम्पैशन) अर्थात तरस) शब्द लैटिन शब्द से लिया गया हैः जिसमें (com (कम) का अर्थ होता है साथ) (pati अर्थात पति का अर्थ होता है जुनून, जिसका मतलब होता है दुःख उठाना)। हमें लोगों के साथ दुःख उठाना चाहिए।

ख) अपनी पहिचान को नहीं त्यागने का अर्थ है कि हमें मसीही बने रहना है। भटके हुए लोगों के तुल्य बनने के लिए हमें अपने मसीही स्तर व अपने मूल्यों से समझौता करने की जरूरत नहीं है।

ग) सन्तुलन का अर्थ होता है कि अपनी पहिचान खोए बिना उनमें से एक बनना चाहिए। यह प्रासंगिकता और बाइबल आधारित सिद्धान्तों के बीच सन्तुलन के समान होता है। हमें अपने आप के लिए ईमानदार रहना चाहिए। हमें इस संसार में रहते हुए भी, इस संसार का नहीं होना है (यूहन्ना १७:१४-१८)।

२) यदि हम इस सन्तुलन को बनाए रखते हैं, तब हम यीशु को उद्धार के लिए एक सच्चे ठोकर का कारण (अर्थात सामना करने हेतु एक बाधा) के रूप में प्रस्तुत कर पाएंगे।

क) लेकिन,यदि हम लोगों के तुल्य नहीं ठहरते हैं तो हम सुसमाचार को स्वीकार नहीं करेंगे, क्योंकि वे सम्भवतः हमें स्वीकार नहीं करें। इस तरह,से हम लोगों के लिए एक ठोकर का कारण बन रहे हैं, जो उन्हें उद्धार प्राप्त करने से रोक रहा है (बजाय इसके कि यीशु उनके लिए सच्चा ठोकर का कारण बने।)।

ख) यदि हम अपनी मसीही पहिचान को खोने की हद तक लोगों के तुल्य होना चाहते हैं तो विश्वसनीयता को खोने के कारण, हम यीशु को प्रस्तुत ही नहीं कर पाएंगें। इस तरह से, हम लोग ठोकर का कारण ठहरते हैं क्योंकि संदेशवाहक स्वयं संदेश के साथ में अनियमित नज़र आ रहा है।

ङ. परमेश्वर का वचन और आत्मा का अभिषेक हमें विश्व व्यायी रूप में सुसमाचासार प्रचार करने की सामर्थ्य प्रदान करता है। (प्रेरितों १:१६)।

टिप्पणियाँ –

ग. परमेश्वर का उद्देश्य। परमेश्वर क्या कर रहे हैं?

क. परमेश्वर के पास एक अनन्त राज्य है।

१) वह एक अनन्त राजा है (भजन १०:१६)।

२) वह एक श्रेष्ठ राजा है (भजन १०३:१९)

ख. पौराणिक विरोध हुआ था।

१) लूसीफर का विद्रोह (यशा १४:१२-१४)।

२) उसके साथ स्वर्गदूतों में से एक तिहाई स्वर्गदूत भी हो लिए (प्रका. १२:४-७)।

३) उन्होंने विरोध में एक अंधकार का राज्य स्थापित कर लिया, जो दूसरों को धोखा देने के लिए ज्योति का राज्य के समान प्रतीत होता है (यशा १४:१४; २ कुरि ११:१४ ,१५)।

४) यहां पर प्रश्न खड़ा होता है, "यह परमेश्वर श्रेष्ठ हैं, तो वह अन्धकार के राज्य को तुरन्त नाश क्यों नहीं कर देते हैं?" (इस प्रश्न के समाना "बुराईयां होती ही क्यों हैं?" और "शैतान को अभी भी काम करने की अनुमति क्यों दी जाती है?"

क) परमेश्वर केवल शैतान से शक्तिमान नहीं हैं, वरन वह उसकी तुलना में श्रेष्ठ हैं।

ख) परमेश्वर अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए शैतान का इस्तेमाल करते हैं। इसलिए, परमेश्वर की महानता का महिमामण्डल किया जाता है और परमेश्वर को महिमा दी जाती है।

ग) परमेश्वर की महिमा इतनी अदभुत है कि वह क्रोधित मनुष्य से अपनी स्तुति करवाता है और अपने शत्रुओं से अपनी सेवा करवाता है (भजन ७६:१०)। परमेश्वर अपने प्रति मनुष्य के क्रोध का इस्तेमाल करते हुए उस से अपनी स्तुति करवाते हैं।

घ) परमेश्वर आदि में ही शैतान का नाश कर सकते थे। लेकिन इससे परमेश्वर की श्रेष्ठता कम पड़ जाती। इससे परमेश्वर की सामर्थ्य तो प्रगट होती लेकिन परमेश्वर की श्रेष्ठता प्रगट नहीं होती।

टिप्पणियाँ -

लेखक का उदारहणः

कल्पना करके देखें कि आप एक मुक्केबाज़ी के मुकाबले में हैं जिसमें आपको पहले एक घूंसा मारने का अवसर प्रदान किया जाता है। आप पहले किसी को एक घूंसा मारते हैं। आप अपने प्रतिद्वन्दी को धराशाई कर देते हैं। इसका अर्थ है कि आप बलवन्त हैं।

कल्पना करके देखें कि अगली प्रतिस्पर्द्धा में, आप अपने प्रतिद्वन्दी को पहले मुक्का मारने का अवसर प्रदान करते हैं। लेकिन आप उसके मुक्के को खाकर भी बेहोश नहीं होते। इसका अर्थ है कि आप बलवन्त हैं।

कल्पना करके देखिये कि अन्तिम प्रतियोगिता में,आप अपने प्रतिद्वन्दी का अवसर देते हैं कि वह आपको पहला मुक्का मारे। इस बार आप, अपनी बुद्धिमानी का इस्तेमाल करते हुए उसके प्रहार से इस प्रकार से बचते हैं कि, उसका मुक्का उल्टा उसे ही लग जाता है और वह धराशाई हो जाता है। इसका अर्थ है कि आप अपने प्रतिद्वन्दी से श्रेष्ठ हैं।

शैतान के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। शैतान ने यीशु को मारने की कोशिश की। शुक्रवार के दिन (क्रूसीकरण के दिन) ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे एक ज़ोरदार मुक्का मारा है। लेकिन रविवार के दिन (जी उठने वाले दिन) यह साबित हो गया कि शैतान धराशाई हो गया है-वह अपने ही वार से बाहर हो चुका है।

परमेश्वर शैतान से अधिक बलवन्त ही नहीं वरन, वह उससे श्रेष्ठ है (भजन १०३:१०)।

अपना उदाहरण लिखें:

वैश्विक नियोग I

टिप्पणियाँ –

ग. धरती पर परमेश्वर के राज्य का अनावरण हो चुका है।

१) मनुष्य की सृष्टि (उत्प. १ और २)।

२) मनुष्य का पतन (उत्प.३)।

घ. दो समस्याएं।

१) परमेश्वर के राज्य के सामान्तर एक और राज्य है जिसका अगुवा शैतान है।

२) मनुष्य इस समय एक पतित अवस्था में है।

ङ. दो लक्ष्य।

१) कब्ज़ा किये हुए राज्य पर पुनः उदघोषणा करना (राज्य का कार्यक्रम)।

२) मानव जाति के लिए छुटकारा प्रदान करें। (छुटकारा देने वाला कार्यक्रम)।

च. एक समाधान के दो भाग।

१) सामान्तर व विरोधी राज्य पर पुनरूत्थान की विजय।

२) यह मानवजाति को उद्धार प्रदान करता है।

छ. परमेश्वर के राज्य का कार्यक्रम और छुटकारे के कार्यक्रम को हम सबसे पहले उत्प ३:१४,१५ में देखते हैं।

१) १५ वचन में पाया जाने वाला बैर शब्द शत्रुता को दर्शाता है (मूल इब्रानी भाषा में)।

२) "स्त्री के वंश" (अर्थात यीशु-गलातियों ४:४ को देखें) और सर्प(अर्थात शैतान-देखें प्रकाशितवाक्य २०:२)।

क) स्त्री का वंश सर्प के सिर को कुचल डालेगा (शैतान के राज्य पर मसीह के राज्य की विजय)।

ख) और सर्प उस स्त्री के वंश की एड़ी को डसेगा (क्रूस पर मसीह की छुटकारा देने वाली विजय)।

टिप्पणियाँ -

ज. दोनों कार्यक्रमों को दाऊद और अब्राहम की वाचा में देखा जा सकता है।

१) दाऊद राज्य के कार्यक्रम को दर्शाता है।

क) उससे एक राज्य और राजकीय वंश देने की प्रतिज्ञा की गयी (२ शमूएल ७:१२-१६)।

ख) वह राज्य और वह वंश इस्राएल और सम्पूर्ण संसार पर सर्वदा के लिए राज्य करेगा (आमोस ९:१२; जकर्याह १४:९)।

२) अब्राहम छुटकारे की योजना को दर्शाता है।

क) उस से एक ऐसा वंश देने की प्रतिज्ञा की गयी जो सारी जातियों को आशीषित करेगा (उत्प. १८:१८)।

ख) वह वंश यीशु है और उसकी आशीष छुटकारा है (गलातियों ३:६-१६)।

झ. दोनों योजनाओं को हम दाऊद की सन्तान और अब्राहम की सन्तान के जीवन में देख सकते हैं (वे ऐसे "प्रारूप" या उदारहण को दर्शाते हैं जो भविष्य को दिखाता है)।

१) दाऊद की सन्तान सुलैमान था (जो राजा मसीह का प्रतीक है)। सुलैमान के राज्य में इस्राएल का राज्य अपने सर्वश्रेष्ठ सुशासन पर था।

२) अब्राहम का पुत्र इसहाक था। (जो मसीह को एक मेम्ने के रूप में दर्शाता है)।

३) उत्प.२२:१-१४ का अध्ययन करो और निम्नलिखित चिन्तन पर ध्यान दें।

क) विद्वानों को मानना है कि मोरिय्याह देश का पर्वत (उत्प २२:२) ही गुलगुत्ता है (जहां पर यीशु को क्रूस दी गयी थी)।

ख) पद २ ज़ोर देता है कि इसहाक ही वह इकलौता पुत्र है (यूहन्ना ३:१६ को देखें)।

ग) (उत्प २२:६) की तुलना "Via de la Rosa" अर्थात "वीया डे ला रोसा" से करें (अर्थात उस मार्ग से जिस पर होकर यीशु गुलगुत्ता तक गये थे)।

घ) उत्प. २२:१० की तुलना यशा ५३:१० से करें।

ङ) उत्प.२२:१४ में दिये निष्कर्ष पर एक भविष्द्वाणी के रूप में ध्यान दें।

ञ. दो योजनाएं दाऊद और इसहाक से सम्बन्धित दो जानवारों में दिखती है (ये उदारहण के रूप में हैं)।

१) सिंह परमेश्वर के राज्य की योजना दर्शाता है (उत्प ४९:९; प्रकाशितवाक्य ५:५)।

२) मेम्ना छुटकारे की योजना को प्रदर्शित करता है (यूहन्ना १:२९; यशायाह ५३:७)।

टिप्पणियाँ –

ट. दो योजनाएं परमेश्वर के उद्देश्य को दर्शाते हैं। ये दो भिन्न योजनाएं हैं। फिर भी वे एक दूसरे से संबंधित हैं। वे एक दूसरे से जुड़े हैं (प्रका.५:१२)।

१) शैतान मनुष्य से घृणा करता है।

२) लेकिन परमेश्वर शैतान से श्रेष्ठ हैं।

३) परमेश्वर मनुष्य की जरूरत के समाधान के लिए पहली योजना (शैतान को लेकर समस्या) की ज़रूरत का इस्तेमाल करते हैं। अतः, वह शैतान और उसके विद्रोह का सकारात्मक ढंग से इस्तेमाल करते हैं।

चर्चा विषय

निम्नलिखित चार्ट का पर अध्ययन और चर्चा उसे परमेश्वर की योजना का सार मानकर करें।

२ योजनाएं	२ योजनाएं	२ लक्ष्य	२ भाग १ समाधान	२ चोटें	२ वाचाएं	२ पुत्र	२ जानवर
राज्य की योजना	शैतान का विरोधी राज्य	हड़पे राज्य की पुनःघोषणा	पुनरूत्थान में विजय	सिर को कुचलेगा	दाऊद	सुलैमान	सिंह
छुटकारे की योजना	पतित मनुष्य	स्वतन्त्र मानवजाति	उद्धार का उपाय	एड़ी को डसेगा	अब्राहम	इसहाक	मेम्ना

घ. परमेश्वर की योजना।

१. उत्पत्ति अध्याय १-११ में सृष्टि, मनुष्य के पतन, और मनुष्य की प्रगतिशील दुष्टता को दर्शाया गया है।

२. उत्प. १२:१-३ में एक बदलाव नज़र आता है। परमेश्वर एक व्यक्ति का चुनाव करते हैं जिसके द्वारा वह कार्य कर सकें।

क. क्या परमेश्वर ने एकाएक मानवजाति को नाश करने का निर्णय ले लिया? हो सकता है कि वह तंग आ गये होगे। क्या उन्होंने अपने आप को तुष्ट करने के लिए एक पसन्दीदा व्यक्ति को चुना?

ख. नहीं! नहीं उत्प ३:१४-१५ में दर्शायी गयी योजना में से कुछ भी नहीं बदला। परमेश्वर के ने केवल नए तरीके से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। उसने अपने चुने हुओं के द्वारा अपनी योजना को पूरा करना शुरू कर दिया।

टिप्पणियाँ -

II. इस्राएल का कर्तव्य, अवसर और प्रतिउत्तर।

क. परमेश्वर ने इस्राएल को एक नियोगी अर्थात एक मिश्नरी राष्ट्र के रूप में चुना।

१. राष्ट्रों के प्रति परमेश्वर का नियोग मत्ती २८ में प्रारम्भ नहीं होता है। यह तो आदि पुस्तक अर्थात उत्पत्ति से प्रारम्भ होता है।

२. बाबेल की मीनार के बाद, परमेश्वर ने लोगों अलग अलग राष्ट्रों और भाषाओं में बदल दिया (वर्तमान में लगभग ५०००, अलग-अलग भाषाएं पायी जाती हैं)। उसने बाद परमेश्वर एक एक राष्ट्र और एक एक परिवार में कार्य करने लगा। बाकि की बाइबल नियोग से जुड़ी इस महान कहानी के बारे में बताती है।

३. इस्राएल को एक मिशनरी के रूप में चुना गया था। इस्राएल को दूसरों को बाहर निकालने के लिए नहीं चुना गया था। बल्कि, इस्राएल को दूसरों को जोड़ने या मिलाने के लिए चुना गया था (याद करें कि अध्याय १ के अन्त में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने जाति जाति तक सुसमाचार सुनाने के लिए अपने तरीके को बदल दिया-उन्होंने लोगों के द्वारा काम करने का फैसला किया)।

४. अगर हम पुराने नियम को तीन भिन्न दृष्टिकोणों से पढ़ते हैं तब हम उसे और भी ज्यादा अच्छी तरह से समझ सकते हैंः

क. इस्राएल का कर्तव्य ("एक आशीष बनना" उनकी ज़िम्मेदारी है)। इस्राएल को यह जिम्मेदारी दी गयी है कि वह दूसरों में अपनी आशीष को बांटे।

ख. इस्राएल का अवसर (परमेश्वर की ओर से उनका अधिकार "मैं तुम्हें आशीष दूंगा")। इस्राएल को परमेश्वर की आज्ञा मानने के साधन और योग्यता दोनों प्रदान की गयी थीं।

ग. इस्राएल का प्रतिउत्तर। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो, इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना। अन्त में, उनके न चाहते हुए भी उन्हें देशों में भेज दिया गया (बन्धुवाई में जाने के द्वारा)।

ख. इस्राएल का कर्तव्य।

१. निष्क्रिय कर्तव्य -- संसार के लिए एक आशीष होने का अर्थ मसीह के जन्म के लिए वंशावली में स्थान प्रदान करना।

२. सक्रिय कर्तव्य -- संसार के लिए एक आशीष होने का अर्थ परमेश्वर के नियोग की योजना में एक अग्रसर व सक्रिय भूमिका निभाना है।

वैश्विक नियोग I

टिप्पणियाँ -

क. उत्प. १२:१-३ का अध्ययन करें (कर्तव्यों के तीन वाक्य)।

१) "और तू सब जातियों के लिए आशीष होगा" (पद २ ग)।

२) "जो तुझे आशीष देगा उन्हें मैं आशीर्वाद दूंगा और जो तुझे शाप दे उसे मैं शापित करूंगा (पद ३)।

३) "और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे" (पद ३ ग)।

क) उत्प १२:१-३ एक वाचा है। यह एक अनोखी वाचा है जिसमें वाचा से सम्बन्धित दोनों ही पक्षों को कर्तव्य दिया गया है (उदारहण के तौर पर आज्ञाकारिता के बदले में सुरक्षा)। जितनी मज़बूती से कोई पक्ष अपने समर्पण को पूरा करता है, उतनी ही बलवन्त वाचा उसके लिए ठहरती है। इस्राएल को आशीष देना परमेश्वर की जिम्मेदारी है। लेकिन इस्राएल की जिम्मेदारी दूसरों के लिए आशीष होना है।

ख) इसी वाचा को उत्प. १७ में अब्राहम के लिए दोहराया गया। यह वाचा उत्प २६:४ में इसहाक और उत्प २८:१४,१५ में याकूब के लिए दोहराई गयी है।

ग) जैसा के पहले भी कहा गया था, जाति जातियों के लिए परमेश्वर का नियोग मत्ती २८ में प्रारम्भ नहीं हुआ था। वह उत्पत्ति में प्रारम्भ हुआ था।

(१) मत्ती २८ (पद १९ में "जाओ") और उत्प १२ (पद १ में "जाओ")की समानता पर ध्यान दें।

(२) इसके अलावा। मत्ती २८ ("जाओ" और "मैं तुम्हारे साथ हूँ") और उत्प.२८:१४,१५ ("भूमण्डल के सारे कुल" और "मैं तुम्हारे साथ में हूं")।

ख. निर्गमन १९:३-६ का अध्ययन करें।

१) इस्राएल का कर्तव्य आज्ञा मानना और वाचा में बने रहना है।

२) इस्राएल के पास में एक अवसर थाः

क) वे अनमोल खज़ाना ठहरेंगे (जातियों के लिए ज्योति ठहरेंगे)।

ख) वे राज्य में याजक ठहरेंगे (संसार के लिए सेवक, परमेश्वर के राज्य में सेवा करने वाले, लोगों और परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ होगें)।

टिप्पणियाँ -

ग) वे एक पवित्र (अलग किये हुए) वंश (जाति जाति में परमेश्वर के नाम को अलग ठहराने के लिए) ठहरेंगे। निश्चय तौर पर इस्राएल निर्गमन में आशीषित था। उन आशीषों का इस्तेमाल परमेश्वर के नाम को अन्य देशों के बीच में महान ठहराने के लिए किया गया।

ग. भजन संहिता ६७:१-७ का अध्ययन करें।

१) पद ५ से लेकर ७ के बीच दो वचनों में परमेश्वर की आशीषों के कारणों पर ध्यान दें।

२) इस्राएल को अन्य जातियों अर्थात राष्ट्रों को आशीष देने के लिए आशीषें दी गयी थीं। अब्राहम की वाचा के अन्तर्गत यह इस्राएल की ज़िम्मेदारी थी।

ग. इस्राएल का अवसर।

१. उत्प १२:१-३ का पुनः अध्ययन करें (अवसर या आशीषों के तीन कथन)।

क. "मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा" (पद २ अ)

ख. "मैं तुझे आशीष दूंगा।" (पद २ ख)

ग. "मैं तेरा नाम बड़ा करूंगा।(पद २ ग)।

१) परमेश्वर वाचा के अपने भाग में विश्वास योग्य बने हैं। उन्होंने इस्राएल को आशीषित किया। परमेश्वर ने इस्राएल को आशीष देने से पहले, उसके द्वारा दूसरों को आशीष देने की अपेक्षा बिल्कुल नहीं की। (परमेश्वर हमारी क्षमता से अधिक हम से कुछ भी करने की अपेक्षा नहीं करते हैं-मत्ती २५:१५ और १कुरिन्थियों १०:१३)।

२) परमेश्वर कर्तव्यों को निभाने के लिए अवसर प्रदान करते हैं।

२. दूसरों को आकर्षित करने के अवसर।

क. मन्दिर ने बहुत से लोगों को इस्राएल में आकर्षित किया (देखें १ राजा ८:४१-४३)।

१) याद रखें कि परमेश्वर ने उनसे कहा था कि वह उनके नाम को बड़ा बनाएंगें (उत्प १२:२ ग)।

२) क्यों? ताकि भूमण्डल के सारे लोग उसके नाम को जान लें (१ राजा ८:४३)।

३) इस तरह से, इस्राएल को अपने जिम्मेदारी पूरी करना का अवसर प्रदान किया गया था।

टिप्पणियाँ -

ख. बहुत से लोगों को इस्राएल भौगोलिक स्थिति बहुत आकर्षित करती थी।

१) यह अति उपजाऊ भूमि थी।

२) इसके अलावा यह तीन महाद्वीपों के बीच में स्थित था।

३) यह संसार भर का एक महत्वपूर्ण चौराहा था।

४) परमेश्वर ने कहा कि वह इस्राएल को एक बड़ी जाति बनाएंगें (उत्प १२:२ क)। यहां पर भी परमेश्वर ने इस्राएल को अवसर प्रदान किया कि वह अपने कर्तव्य को पूरा कर सके।

३. फैलने का अवसर।

क. इस्राएल की भौगोलिक स्थिति इसलिए भी एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया क्यों वे यहां से मिश्नरियों अर्थात नियोगियों को भेज सकते थे। अधिक संघर्ष किये बिना इस्राएल बहुत से बहुत से स्थानों और लोगों तक जा सकता था।

ख. सम्पूर्ण पुराने नियम में हम देखते हैं कि संदेशवाहकों को सम्पूर्ण भूमण्डल के लिए आशीष बनने हेतू "भेजा" (यूसुफ--देखें उत्प ५०:२०, दानिय्येल, एस्तेर, योना तथा पुराने नियम की भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में बहुत से "वक्ताओं" को देखते हैं)।

१) इस्राएल को परमेश्वर के ज्ञान की आशीष प्रदान की गयी थी।

२) इसलिए उनकी यह ज़िम्मेदारी है कि वे दूसरों में यह ज्ञान बांटें।

४. सबसे बड़े अवसर के रूप में संदेश।

क. इस्राएल की सबसे बड़ी आशीष यह है कि परमेश्वर ने अपने आपको उस पर प्रगट किया था। वे परमेश्वर को जान सकते थे (देखें भजन ७३:२८)।

ख. इस्राएल का परमेश्वर के साथ में सीधा सम्बन्ध था। उनके पास परमेश्वर का संदेश था और वे उसे साझा करने के लिए ज़िम्मेदार थे।

१) इस संदेश का सार मीका ६:८ में दिया गया है।

२) परमेश्वर ने अपने नाम के माध्यम से स्वयं का प्रगट करके संदेश दिया (विशेष तौर पर यहोवा--परमप्रधान परमेश्वर- निर्गमन ३:१३-१५)।

टिप्पणियाँ -

३) यह संदेश एक उद्धार का संदेश था (अय्यूब १९:२५-२७ को देखें)।

क) इस संदेश तक पहुंच होना एक आशीष की बात थी। यह एक अवसर था।

ख) इसलिए, इसे साझा करना एक बड़ी जिम्मेदारी थी। इस्राएल के पास में अन्य किसी भी देश की तुलना में अधिक अवसर था। परन्तु उन पर बहुत अधिक जिम्मेदारियां भी थी (मत्ती १०:८ और लूका १२:४८ में राज्य के सिद्धान्तों को देखें)।

घ. इस्राएल का प्रतिउत्तर।

१. इस्राएल का प्रतिउत्तर सकारात्मक नहीं था। परमेश्वर ने उन्हें आशीष परन्तु उन्होंने विद्रोह किया और मूर्तिपूजा करने लगे। उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं किया।

२. परमेश्वर ने उन्हें एक राजा चुनने की आज़ादी दी। इसका परिणाम अधिक मूर्तिपूजा हुई। अन्त में राज्य विभाजित हो गया (पढ़ें १राजा ११:१-१३)।

३. इस्राएल ने परमेश्वर की दया और उसके अनुशासन का सही प्रतिउत्तर नहीं दिया (यिर्मयाह ३:१-१४ विशेष ३-५)। फिर भी परमेश्वर अपने छुड़ाए हुओं को खड़ा किया (यहेजकेल २०:३०-३८)।

४. इस्राएल मूर्तिपूजा, विद्रोह करने लगा और स्वार्थी हो गयी। इस्राएल ने संसार भर में परमेश्वर का गवाह बनने के कर्तव्य से इनकार कर दिया। इस बात को हम योना के मामले में विस्तृत ढंग से दर्शाया गया था।

५. परमेश्वर ने एक व्हेल मछली का इस्तेमाल करके उस देश में जाकर आज्ञा पूरी करने के लिए योना की मदद की। यदि परमेश्वर के लोग स्वेच्छा से परमेश्वर के नियोग के आदेश का पालन नहीं करते हैं, तब उन्होंने न चाहते हुए भी अपने कर्तव्य का पालन करना होगा।

क. इस्राएल की गवाही का परमेश्वर के नियोग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगा।

ख. वे एक आशीष नहीं थे। इसलिए उन्हें आशीषें मिलनी बन्द हो गयीं और वे अनैच्छिक आशीष बन गये। इसी को विक्षेपण या निर्वासन कहते हैं।

६. विक्षेपण या निर्वासन।

क. ७२२ ई.पू. में इस्राएल अश्शूर में निर्वासित हुई थी।

ख. ५८७ ई.पू में यहूदा का निर्वासन बेबीलोन में हुआ था।

टिप्पणियाँ -

ग. छुड़ाए गये लोगों के माध्यम से (जो बच गये थे और जो विश्वास योग्य बने रहे थे) परमेश्वर ने अपने नियोग के उद्देश्य को सक्रिय करना प्रारम्भ कर दिया था।

१) निर्वासन के दौरान, यहूदियों ने बेबीलोन और फारस में परमेश्वर का वचन फैला दिया।

२) उसके बाद जब शरणार्थियों के रूप में यहूदियों ने ग्रीस और रोम में भी परमेश्वर के वचन को फैला दिया (उनके पास १९४८ तक अपना कोई देश नहीं था)।

ङ. सारांश का पुनरावलोकन।

१. परमेश्वर एक पात्र (इस्राएल) के द्वारा अपने नियोग पर कार्य करने का चुनाव करते हैं।

२. उन्होंने एक वाचा बांधीः परमेश्वर उन्हें आशीष देगें ताकि आप दूसरों के लिए आशीष का कारण बन सकेंगे। इस तरह से, जाति जाति के लोगों को परमेश्वर की गवाही और उद्धार का संदेश सुनाया जा सकता था। वचन और कामों के द्वारा, एक आज्ञाकारी इस्राएली के द्वारा गवाही दी जाएगी (रोमियों ४:११; याकूब २:२३)।

३. परमेश्वर ने इस्राएल को आशीष दी।

४. इस्राएल ने दूसरों को आशीष देने के लिए परमेश्वर की आशीष का इस्तेमाल नहीं किया।

५. परमेश्वर ने अपनी आशीषों को उठा लिया, जिसका परिणाम निर्वासन हुआ। इस तरह से परमेश्वर के नियोग की योजना इस्राएल के न चाहते हुए भी आगे बढ़ती रही।

चर्चा विषय

पिछले विचारों पर चर्चा करने तथा उसके अनुप्रयोग का इस्तेमाल करने के लिए निम्नलिखित आरेख का इस्तेमाल करें।

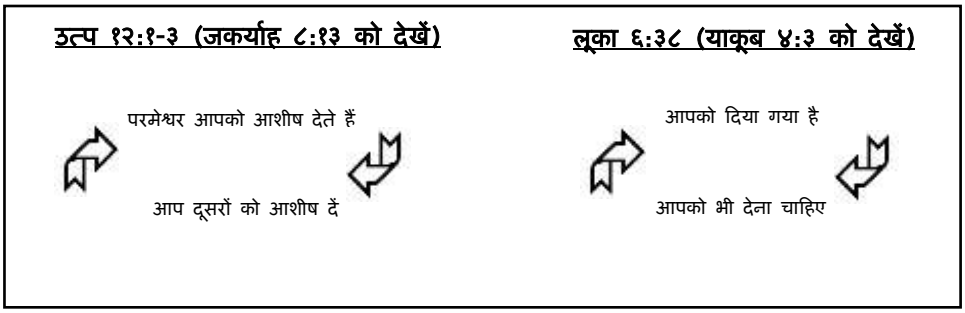

ध्यान दें: अवसर दिया गया है इसीलिए यह एक ज़िम्मेदारी है। जितना ज़्यादा अवसर दिया जाएगा, उतनी ही अधिक जिम्मेदारी होगी। जितनी अधिक ज़िम्मेदारी होगी, उतना ही आपका अवसर प्रदान किया जाएगा।

टिप्पणियाँ -

III. इस्राएल, मसीही, और परमेश्वर का राज्य।

लेखक का उदारहणः

जिन नियोगों या परियोजनाओं पर पुराने नियम में ज़ोर डाला गया था वहीं नए नियम में आगे बढ़ती हैं। पुराने नियम की अन्तिम पुस्तक मलाकी है। यह पुस्तक इस्राएलियों द्वारा अन्य जातियों को गवाही देने में असफलता का आरोप लगाती और उस पर बल देती है, और यह मसीह के आने की आशा प्रदान करती है (मलाकी ३:१)।

क. इस्राएल तथा आने वाला राज्य।

१. इस्राएल के लोग आने वाले राज्य को नहीं समझ पाए। वे राजनैतिक बदलाव की अपेक्षा कर रहे थे। वे एक शारीरिक अधिकार की चाह कर रहे थे।

२. मसीह ने आत्मिक अधिकार प्रदान किया।

क. वे मत्ती ४:१७ और यूहन्ना ३:३,५ जैसे कथनों के कारण दुविधा में थे।

ख. उन्होंने समझा कि ये वचन राष्ट्रों का न्याय करने, तथा इस्राएल को एक राजनैतिक मसीह देने की बात कर रहे हैं।

१) इस गलतफहमी का परिणाम यीशु मसीह का क्रूसीकरण हुआ क्योंकि वह मसीह के प्रति उनकी उम्मीदों को पूरा नहीं कर पाए थे। उन्होंने उसे ईश-निंदा करने वाला बताया।

२) उनकी समझ में मसीह उनकी राजनैतिक अभिलाषाओं को पूरा करने वाला था। वे देखने में असमर्थ थे। वे मसीह की सही योजना और उद्देश्य को नहीं देख पाए।

३) परमेश्वर के राज्य का अर्थ परमेश्वर के नियम हैं। यह कोई स्थान या लोग नहीं हैं।

टिप्पणियाँ -

३. यहूदियों ने परमेश्वर के राज्य को गलत समझा। यह एक भेद था। यह छुपा हुआ था (मरकुस ४:११)। मगर यह भेद उन लोगों के सामने खोला गया था जिनके सुनने के कान थे।

क. राज्य मनुष्यों के बीच में दो भिन्न स्तरों में कार्य करता हैः

१) यह राज्य अभी तक इसलिए नहीं आया है क्योंकि इसने अभी मानवीय राज्य को समाप्त नहीं किया है।

२) यह आ चुका है क्योंकि यह शैतान के नियमों पर आक्रमण करता है।

ख. राजनैतिक और बाहरी परिवर्तन करने की बजाय, परमेश्वर का राज्य आत्मिक और भीतरी परिवर्तन करता है।

ग. यहां पर सामर्थ्य के साथ (अग्नि और नाश) होने के, वह यहां प्रोत्साहन के साथ है।

१) वह राज्य हमारे बीच में पिन्तेकुस्त के समान है (मरकुस ९:१)।

२) लेकिन, इससे हमें कोई नुकसान नहीं होता (अग्नि--मत्ती ३:११ और लूका ९:५१-५५), परन्तु यह प्रोत्साहित करने के लिए है (एक चिन्ह या एक प्रमाण- यूहन्ना २:११ और मरकुस १६:२० को देखें)।

४. यूहन्ना १८:३६ के कारण, मसीह ने शारीरिक राज्य के प्रस्ताव को ठुकरा दिया (मत्ती ४:८-१०)।

ग. मसीह और परमेश्वर का राज्य।

१. यीशु ने प्रायः अपने आपको मनुष्य के रूप में सम्बोधित किया (अर्थात मनुष्य का प्रतिनिधित्व करते हुए)।

क. मनुष्य के पुत्र का सम्बोधन यहेजकेल से आता है (यहेजकेल २:३;३:१७- मनुष्य के पुत्र की नियोगी भूमिका पर ध्यान दें)। इसके अलावा नियोग पर ज़ोर दिये जाने पर भी ध्यान दें। (यहेजकेल ३७:२८;३९:७)।

ख. मनुष्य का पुत्र सम्बोधन हमें दानिय्येल की पुस्तक में भी मिलता है (दानिय्येल ७:१३,१४)। मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के राज्य का कैसा स्वभाव दिया गया है?

२. यह सत्य है। उसकी सेवकाई के प्रारम्भ से ही, यीशु संसार पर अधिकार करने के लिए नियुक्त किये गये थे। लेकिन वह इस कार्य को शैतान के साथ समझौता करने के द्वारा नहीं करने जा रहे थे (मत्ती ४:८), और सारी जातियों को उद्धार प्राप्त करने से बाहर रखने जा रहे थे (लूका ४:२४-२६)।

टिप्पणियाँ -

३. "पहले यहूदियों के लिए फिर यूनानियों के लिए" (रोमियों १:१६; २:१०)।

क. पहले यहूदी (मत्ती १०:५,६,१८,२३ को देखें)।

१) १२ प्रेरितों (इस्राएल के १२ गोत्रों को प्रदर्शित करते हैं) इस्राएल के घराने के लिए नियोग पर भेजा गया।

२) वे पहले इस्राएल के पास क्यों भेजे गये?

क) विशेष उद्देश्यों के लिए। एक यहूदी सुसमाचार को समझ सकता था। वह यहूदीवाद पर आधारित था।

ख) एक परिस्थिति की प्राथमिकता के कारण। जल्द ही, इस्राएल को दण्ड मिलने वाला था।

ख. अन्यजातियों को भी (लूका १०:१ को देखें)।

१) ७० लोगों के समूह को शहर के बाहर **भेजा** गया (अन्यजातियों में)।

२) यहूदी परम्पराओं में (अर्थात नूह के ७० वंशजों के आधार पर, जिनसे जातियों का निर्माण हुआ) ७० जातियां थीं।

३) कई विद्वान सांकेतिक तौर पर मानते हैं कि यीशु ने पहले मिश्नरियों को पहले यहूदियों में और फिर अन्यजातियों के बीच में भेजा।

४. मसीह की सेवकाई में दोहरे उद्देश्य को देख पाना बहुत आसान है (अर्थात यहूदियों और फिर यूनानियों में)। कई लोग कहते हैं कि यीशु ने अन्यजातियों के बीच में सेवा नहीं निभाई थी। यह सत्य नहीं है।

क. रोमी सूबेदार के उदाहरण का अध्ययन करें (मत्ती ८:५-१३)।

१) क्या वह **रोमी** सूबेदार एक यहूदी था? नहीं।

२) पूरब और पश्चिम से आने वाले लोग कौन होते हैं? अन्यजातियां।

३) परमेश्वर के राज्य में पुत्र कौन था? यहूदी।

४) क्या आप उस परिवर्तन को देख पाए जो उसके भीतर होना प्रारम्भ हो गया था।

ख. कनानी स्त्री के उदाहरण का अध्ययन करें (मत्ती १५:२१-२८)।

१) क्या वह **कनानी** स्त्री एक यहूदी थी? नहीं।

टिप्पणियाँ -

२) ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु अन्यजातियों में सेवा करने से इनकार कर रहे हैं। लेकिन हम फिर भी जानते हैं कि उन्होंने उससे पहले भी अन्यजातियों में सेवा की थी। क्या यीशु झूठे थे? नहीं।

३) यीशु अतिशियोक्ति को शिक्षा देने के एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। वह अपने चेलों को शिक्षा दे रहे थे (जिन्हें वे शिक्षा देने के लिए देश देश के लोगों में भेजा जाने वाला था) कि वे पक्षपात न करें।

ग. अध्ययन करें कि सामरिया गांव में क्या हुआ (लूका ९:५१-५६)।

१) क्या सामरी स्त्री यहूदियों में से एक थी? नहीं।

२) यीशु ने इस घटना के सन्दर्भ में उद्धार की बात की। क्या उसका अर्थ यह था कि उद्धार केवल यहूदियों के लिए ही है? वह तो बिल्कुल इसके विपरीत बात बोल रहे थे।

३) ध्यान दें कि इस घटना के तुरन्त बाद में यीशु ने ७० लोगों को प्रचार करने के लिए भेजा।

घ. यूहन्ना १२:३२ का अध्ययन करें।

१) क्या हर एक जन का उद्धार होगा? (नहीं (मत्ती ७:१३,१४)।

२) जब यीशु ने "सब मनुष्यों" कहा, तब वह सब प्रकार के लोगों को लिए बातें कर रहे थे। अर्थात हर राष्ट्र से मनुष्य (प्रकाशित ७:९)।

३) ध्यान दें कि यीशु ने एक गलीली के प्रश्न का उत्तर देते हुए इस बात को बोला था (यूहन्ना १२:२०-२३)।

ङ. इम्माऊस की सड़क का अध्ययन करें (लूका २४:२७,४५-४९)।

१) यीशु ने उन्हें क्या समझाया? उन्होंने उन्हें पुराना नियम समझाया।

२) उन्होंने किस तरह से पुराना नियम समझाया? उन्होंने उन्हें समझाया कि परमेश्वर की योजना जाति जाति तक पहुंचना है।

३) याद रखें कि लूका ने अपनी पुस्तक प्रेरितों के काम में आगे बढ़ाई। यीशु ने अपने चेलों को नियोग की योजना के बारे में बताया था (लूका २४:४७)। उसके बाद उन्होंने उन्हें देशों में भेजा (प्रेरितों १:८)।

५. यीशु मसीह की सेवकाई का दोहरा उद्देश्य उसकी अन्तिम आज्ञा में देखने को मिलता है (मत्ती २८:१८-२०)।

टिप्पणियाँ -

घ. राज्य का सुसमाचार।

१. राज्य कब आएगा? (मत्ती २४:१४)।

क. राज्य आने वाला नहीं वरन पहले ही आ चुका है। वह मसीह में पहले ही आ चुका है, लेकिन वह अपनी पूर्णता में अभी नहीं आया है।

ख. वह अपनी पूर्णता में तब आएगा जब सारी जातियों में सुसमाचार का प्रचार हो जाएगा।

ग. यदि हमारी पहली चाह परमेश्वर का राज्य है (मत्ती ६:३३), तब हम परमेश्वर के राज्य के पूर्णता में आने की सारी मांगों को पूरा करने का प्रयास करेंगे। और उसकी मांग यह है कि हम सारी जातियों में जाकर उसके सुसमाचार को सुनाएं। नियोग प्रत्येक मसीही की प्राथमिकता होनी चाहिए।

लेखक की टिप्पणीः

सारे मसीहियों को नियोग के कामों के प्रति समर्पित होना चाहिए। कई लोगों को एक मिश्नरी के रूप में जाने के लिए वरदान मिला होगा। कुछ लोगों को मिश्नरी कामों में आर्थिक रूप से सहायता करने का वरदान मिला होगा। कुछ लोगों को इन कामों के लिए मध्यस्था की प्रार्थना करने का वरदान मिला होगा। कुछ लोग इस प्रयास को सम्भव बनाने के लिए छोटे छोटे कामों को करेगें। लेकिन, सभी मसीहियों को नियोग के कामों के प्रति समर्पित होना चाहिए।

घ. एक ऐसे राज्य में रहने का क्या उद्देश्य है जो अभी तक अपनी पूर्णता में विद्यमान नहीं हुआ है?

१) इसका उद्देश्य इस तरह का जीवन जीना है जो राज्य को उसकी पूर्णता में आने में सहायता करता है। इस तरीके को नियोगों का तरीका कहते हैं।

२) राज्य अभी उपलब्ध है। क्यों? ताकि उसका इस्तेमाल करके राज्य की पूर्णता को प्राप्त किया जा सके।

३) हम परमेश्वर को इसलिए जानते हैं ताकि हम दूसरों को उनके बारे में बता सकें।

४) शक्ति (चिन्ह व आश्चर्यकर्म) अभी राज्य में उपलब्ध है। क्यों? ताकि इसका उपयोग करके जातियों को सुसमाचार सुनाया जा सके (मरकुस १६:२०)।

५) जो राज्य "पहले" से विद्यमान है वह इसलिए विद्यमान है, ताकि जो राज्य "अभी तक नहीं आया है" उसे लाया जा सके।

टिप्पणियाँ –

२. संदेश, नियोग और लक्ष्य (मत्ती २४:१४)।

क. संदेश "राज्य का सुसमाचार" है।

१) मृत्यु पर विजय।

क) यह परमेश्वर का सबसे महत्वपूर्ण नियोग है (१ कुरि. १५:२६)।

ख) मसीह द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के बारे में लोगों को बताना परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार है। यह विजय "पहले ही" प्राप्त हो चुकी है लेकिन "पूर्ण नहीं" है।

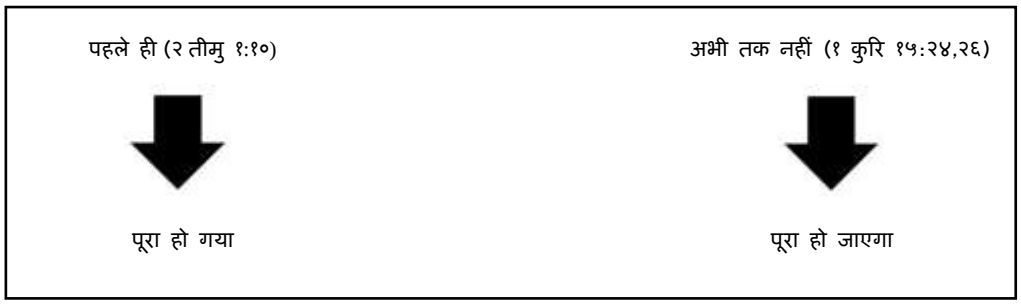

दोनों ही पदों में एक ही ग्रीक शब्द का इस्तेमाल किया गया है। यह पहले ही पूरा हो चुका है। यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। परमेश्वर के राज्य के आने में दो चरण है क्योंकि मृत्यु के नाश किये जाने में दो चरण हैं।

२) शैतान पर विजय।

क) यह भी "पहले ही मिल चुकी है" और "अभी मिलना बाकि है।"

(१) पहले ही- शैतान को पहले ही हराया जा चुका है (इब्रानियों २:१४,१५-- ध्यान दीजिए कि वही ग्रीक शब्द १ कुरि १५:२४ में भी पाया जाता है।

(२) बाकि है- शैतान को आग की झील में डाला जाएगा (प्रकाशित २०:१०)। वह अभी सक्रिय है (१पतरस ५:८ और २ कुरि ११:१४)।

ख) परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार संदेश है। यह संदेश मृत्यु और शैतान पर विजय की उदघोषणा करता है।

टिप्पणियाँ -

३) पापों पर विजय।

क) यह भी "पहले हो चुका है" और "बाकि है"।

(१) पहले हो चुका है - पाप को नाश किया जा चुका है (रोमियों ६:६ और इब्रानियों ९:२६--ध्यान दें कि वही ग्रीक शब्द रोमियों ६:६ में पाया जाता है जैसे कि वह १कुरि १५:२४ में पाया जाता है)।

(२) अभी बाकि है - जब वह नाशवान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा-हे मृत्यु तेरी जय कहा रही? (१कुरि १५:५४-५६)।

ख) चाहे पाप इस संसार में विद्यमान है लेकिन आपको उसकी शक्ति के अधीन रहने की कोई आवश्यकता नहीं है।

४) सारांश का पुनरावलोकन।

क) परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार ही संदेश है। शुभसंदेश (सुसमाचार) यह है कि शत्रुओं पर विजय मिल गयी है। यह वर्तमान और भविष्य में परमेश्वर की विजय की उदघोषणा है।

ख) निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें:

विजय	**वर्तमान विजय**	**भविष्य में विजय**
मत्यु	२ तीमु १:१०	१ कुरि. १५:२४-२६
शैतान	इब्रानियों २:१४	
पाप	रोमियों ६:६	

ध्यान दें: हर एक पद में एक ही ग्रीक शब्द का इस्तेमाल किया गया है (katergaysay अर्थात काटरगेसे)। यह द्विमुखी विजय है क्योंकि राज्य "पहले ही" आ चुका है और "आना बाकि" है। इन दोनों की चरणों के लिए संदेश सुसमाचार है। यह वर्तमान और भविष्य के लिए आज़ादी का संदेश है!

ख. नियोग यह है कि यह संदेश "सारी जातियों में प्रचार किया जाए सारी जातियों पर गवाही ठहरे।"

१) नियोग को समझने के लिए हमारे सामने बाइबल का परिदृश्य होना बहुत ज़रूरी है। हमें इतिहास को छुटकारे के इतिहास के रूप में देखना चाहिए।

टिप्पणियाँ –

क) इस्राएल को एक मिश्नरी अर्थात एक नियोगी राष्ट्र के रूप में चुना गया था।

ख) इस्राएल ने अपनी सक्रिय जिम्मेदारी को तुच्छ जाना (अर्थात राष्ट्रों में परमेश्वर की साक्षी बनने को)।

ग) इस्राएल ने अपनी निष्क्रिय जिम्मेदारी को पूरा किया (मसीह के जन्म को)।

घ) इस्राएल ने मसीह को अस्वीकार किया। नियोग को इस्राएल से छीन लिया गया (मत्ती २१:४३)।

ङ) ज़िम्मेदारी नए राष्ट्र अर्थात कलीसिया को दे दी गयी (१पतरस २:९)।

च) कलीसिया एक नया नियोगी राष्ट्र बन गया (मत्ती २८:१९,२०)।

२) मसीह के दोनों आगमनों के बीच में सारी जातियों में सुसमाचार के प्रचार किये जाने के इतिहास में इसका अर्थ पाया जाता है (मत्ती २४:१४)।

ग. इसका लक्ष्य यह है कि "तब अन्त आ जाएगा"।

१) क्या आप यीशु को देखना चाहते हैं? क्या परमेश्वर के राज्य की परिपूर्णता को देखना चाहते हैं? क्या आप नए आकाश और नई पृथ्वी को देखना चाहते हैं?

२) यदि आप इन चीज़ों की खोज में हैं, तो आप परमेश्वर के उस दिन को जल्द ही देखना चाहेगें (२ पतरस ३:८-१३)। आप अधिक से अधिक राष्ट्रों में परमेश्वर के वचन को पहुंचाना चाहेगें!

IV. नियोग और कलीसिया।

क. परमेश्वर की इच्छा का पालन करना।

१. मेरे लिए परमेश्वर की क्या इच्छा है? क्या मैं पहले यह पूछता हूं: मेरी इच्छाएं क्या है? उसके बाद क्या मैं अपनी इच्छा में शामिल करने का प्रयास करता हूँ?

२. या यीशु के समान (यूहन्ना ४:३४), उसकी इच्छाओं को अपनी प्राथमिकता बनाता हूं? क्या मैं ईमानदारी के साथ कह सकता हूं: मेरी इच्छा नहीं, वरन आपकी इच्छा पूरी हो? (लूका २२:४२)।

३. यीशु ने अपने जीवन काल में परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया। इसीलिए वह यूहन्ना १७:४ में इन वचनों को कह सके। उस समय में वास्तव में ऐसा प्रतीत होता था मानों यीशु ने कुछ नहीं किया है।

टिप्पणियाँ -

४. लेकिन, सासांरिक मापदण्डों के आधार पर जीवन की सफलता को नहीं मापा जाता। यह आज्ञाकारिता के आधार पर मापा जाता है।

५. यीशु अन्त तक आज्ञाकारी बने रहे (लूका २३:४६)। इसीलिए वह सफल थे। वह किसी भी इन्सान की तुलना में अधिक सफल थे (फिलि.२:९-११)। और उन्हें किसी भी इन्सान की तुलना में सबसे ऊंचा नाम दिया गया।

६. अतः, पूर्ण अधिकार के साथ में (मत्ती २८:१८) वह मत्ती १६:१८ को पूरा करेंगे।

ख. प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया।

१. प्रेरितों के काम की पुस्तक, प्रारम्भिक कलीसिया में नियोग का इतिहास है। प्रेरितों में, हम नियोग के अन्तर्गत कलीसिया की भूमिका को देख व समझ सकते हैं। इसके अलावा हम नियोगियों के तरीकों पर भी अध्ययन कर सकते हैं।

२. प्रेरितों के काम १:८ में हम नियोग के आदेश को देखते हैं। पुस्तक का बाकि का हिस्सा हमें उस आदेश के प्रति कलीसिया के प्रतिउत्तर को दर्शाता है।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें और प्रेरितों के काम १:८ की नियोगी की प्रगतिशील परिपूर्णता पर चर्चा करें।

प्रेरितों १	प्रेरितों ८	प्रेरितों ८:४	प्रेरितों १०	प्रेरितों १३....
➡	➡	➡	➡	➡
यरूशलेम	यहूदिया	सामरिया	अन्यजाति	जगत के छोर तक

३. प्रेरितों के काम के प्रारम्भ में नियोग के महत्व को देखा जा सकता है।
प्रेरितों के काम १ की तुलना मत्ती २४ से करें:

मत्ती २४	**प्रेरितों के काम १**
अंत कब होगा (पद ३)	**अंत कब होगा (पद ६)**
⬇	⬇
उत्तर (पद १४)	**उत्तर (पद ८)**

मिशन महत्वपूर्ण है? यीशु इसके महत्व पर बल देते हुए प्रतीत होते हैं। अन्त इस पर निर्भर करता है।

टिप्पणियाँ -

४. अगली घटना भी (पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना) हमें नियोग के महत्व को दर्शाता है।

क. एक तरह से देखें तो, उस दिन एक चिन्ह के रूप में नियोग पूरा हुआ था। वहां पर उपस्थित अलग अलग देशों के लोग "अपनी अपनी भाषा में उनको बोलते हुए सुन रहे थे" (प्रेरितों २:६)।

ख. लूका २४:४६-४९ में पाये जाने नियोग से पवित्र आत्मा के आने के सीधे संबंध पर भी ध्यान दीजिये।

५. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से, कलीसिया यरूशलेम में बढ़ने लगी।

क. उसके बाद, ८ अध्याय में हम नियोग के दूसरे चरण को प्रारम्भ होता हुआ देखते हैं।

ख. अध्याय १० में नियोग का तीसरा चरण प्रारम्भ होता है।

१) सामरियां में पहुंचने के लिए फिलिप, पतरस, और यूहन्ना को इस्तेमाल किया गया (जो यहूदियों के सौतेले भाई थे)।

२) सामरियां में द्वार खोलने के लिए, पतरस द्वारा हाथ रखने की सेवकाई का इस्तेमाल किया गया (८:१४-१७)।

क) याद रखेंः मत्ती १६:१९ में पतरस को राज्य की कुंजियां दी गयीं थीं।

ख) प्रेरितों के काम २ में उसके प्रचार के कारण ही यहूदियों में बीच में द्वार खुला था।

ग) उसके बाद प्रेरितों ८ में, उसका इस्तेमाल सामरियों के बीच में किया गया।

घ) प्रेरितों १० में उसका इस्तेमाल अन्यजातियों के बीच में द्वार खोलने के लिए किया गया।

टिप्पणियाँ -

३) प्रेरितों के काम ११:१८ तक आते आते यह स्पष्ट हो गया था कि सुसमाचार अन्य देशों तक जा सकता है और गया।

क) इस तरह से एक मिश्नरी को अन्ताकियां में भेज दिया गया (११:२२-२४)। अन्य मिश्नरी भी काम में आकर मिल गया (११:२५, २६)। पहली बार कलीसिया को यहूदियों से अलग हटकर कोई पहिचान मिली। वहां पर अनुयायियों को पहली बार मसीही के रूप में जाना गया (११:२६)।

ख) बाद में, प्रेरितों के काम १५ में, बाद में उनके बीच में यह प्रश्न उठने लगा कि क्या मसीहियों को यहूदी संस्कारों को पालन करने की आवश्यकता है। उन्हें इसकी ज़रूरत नहीं थी। इस तरह से मसीहियों ने अपनी अलग पहिचान बना ली।

६. प्रेरितों १३ में मिशन का अन्तिम चरण अपनी पूरी लय में काम करने लगा। मिश्नरियों को "जगत के अन्तिम छोर तक" भेजा गया।" उन्हें किस तरह भेजा गया?

क. वे पवित्र आत्मा के द्वारा भेजे गयेः

१) वे पवित्र आत्मा के द्वारा बुलाए गये (१३:२)।

२) वे पवित्र आत्मा के द्वारा भेज गये (१३:४)।

ख. वे कलीसिया के द्वारा भेजे गयेः

१) वे कलीसिया के द्वारा बुलाए गये थे (पद २ में पवित्र आत्मा ने कलीसिया के अगुवे के द्वारा बातचीत की)।

२) वे कलीसिया के पास में भेजे गये।

क) उन पर हाथ रख कर प्रार्थना के साथ भेजा गया (पद ३)।

ख) जिस कलीसिया ने उन्हें भेजा था वहां पर आकर उन्होंने अपने अनुभवों को भी साझा किया (१४:२६,२७)। वे स्थानीय कलीसिया के प्रति उत्तरदायी थे। मिश्नरियों को भेजने के क्षेत्र में स्थानीय कलीसिया परमेश्वर के हाथों में एक उपकरण है(हालांकि यह भी पूरी तरह से स्पष्ट है कि स्थानीय कलीसिया मिश्नरियों की सेवा को नियन्त्रित नहीं करती है--मिश्नरी को अपनी सेवकाई पर पूरी तरह से अधिकार है)।

टिप्पणियाँ -

ग. पौलुस की प्रेरिताई की सेवकाई।

१. पौलुस की बुलाहट (प्रेरितों २६:१५-१९ को देखें)।

क. प्रेरित एक भेजा हुआ जन होता है (लैटिन भाषा में हमें इसका पर्यायवाची मिलता है "मिश्नरी")।

ख. पौलुस को अपनी बुलाहट को लेकर दृढ़ निश्चय था (रोमियों १:१४,१५)। यह बहुत आवश्यक है। अपनी बुलाहट के प्रति निश्चय न होने पर, एक मिश्नरी शैतान के लिए आसान शिकार बन जाता है।

२. पौलुस की सेवकाई की तैयारी।

क. मसीह ने पौलुस के मन परिवर्तन के समय में ही उसे एक आदेश दिया। लेकिन, उसके नियोग के काम के लिए तैयार होने में उसे ७ से १७ वर्ष का समय लग गया।

ख. अगुवे को तैयार करने के काफी लम्बा समय लग जाता है। प्रायः इस प्रक्रिया में काफी परिक्षाएं और कठिनाईयां शामिल होती हैं (रोमियों ५:३-५ और याकूब १:२-४)।

चर्चा विषय

पौलुस की सेवकाई की तैयारी के निम्नलिखित आरेख का अध्ययन व उस पर चर्चा करें।[२]

मन परिवर्तन	गवाह व अस्किति	पिछे हटना	प्रशिक्षण	प्रभावशाली सेवकाई
दमिश्क को जाने वाली सड़क	दमिश्क व यरूशलेम	अरब	तरसुस और किलकिया	अन्ताकिया व नियोग

३. प्रेरितों के सुसमाचार प्रचार करने के तरीके (प्रेरितों २६:१८ को देखें)।

क. "उनकी आखों को खोलने के लिए।"

१) सुसमाचार को संदर्भित करने की योग्यता।

२) सुसमाचार को व्यावहारिक बनाने की योग्यता।

३) वास्तविक या व्यावहारिक ज़रूरतों में सुसमाचार का इस्तेमाल करने की योग्यता।

टिप्पणियाँ -

ख. "उन्हें अन्धकार से ज्योति की ओर परिवर्तित करना।"

१) ज्योति की ओर ले जाने की योग्यता।

२) यीशु की ओर ले जाने की योग्यता।

ग. "उन्हें शैतान की शक्ति से परमेश्वर की ओर फेर दें।"

१) किसी को पश्चाताप की ओर फेरने की योग्यता।

२) किसी को मसीह की प्रभुता की अधीनता की ओर फेरने की योग्यता।

३) आवश्यकता पड़ने पर छुटकारे की सेवा निभाने की योग्यता।

घ. "ताकि वे पापों की क्षमा को प्राप्त कर सकें।"

१) किसी को विश्वास के द्वारा नए जीवन की ओर अगुवाई करने की योग्यता।

२) किसी को उद्धार के निश्चय की ओर अगुवाई करने की योग्यता।

ङ. "ताकि वे उन लोगों के बीच मीरास प्राप्त कर सकें जो विश्वास के द्वारा शुद्ध ठहरे हैं।"

१) एक नए विश्वासी को चेला बनाने की योग्यता।

२) किसी व्यक्ति को मसीह की देह के जीवन में प्रतिभागिता करने में अगुवाई करने की योग्यता।

४. पौलुस का नियोगी दल।

क. इस बात को जानना बहुत ही ज़रूरी है कि अपने कार्य में पौलुस अकेला नहीं था।

ख. पौलुस ने एक दल में होकर कार्य किया। निम्नलिखित वचनों को लिख लेंः प्रेरितों १३:२,५,१३; प्रेरितों १५:३६,४०; प्रेरितों १८:२-५; फिलिप्पियों ४:३।

टिप्पणियाँ –

५. पौलुस का नियोगी दर्शन।

क. पौलुस के तरीके उसके समय के समकालीन तरीकों के बिल्कुल विपरीत था।

ख. पौलुस के लिए, नियोग का अर्थ उन स्थानों तक पहुंचना था जहां अभी तक परमेश्वर का वचन नहीं पहुंचा था। पौलुस की नज़र सर्वदा सीमाओं पर लगी रहती थी (रोमियों १५:२०)।

ग. पौलुस ने शिशु कलीसियाओं रोपित व उनका पोषण किया। उसके बाद वह उस जगह को छोड़े, नए स्थान में चले गये जहां वचन नहीं पहुंचा था (रोमियों १५:१४-२५)।

घ. बहुत से आधुनिक मिश्नरियों अर्थात नियोगियों को जगह छोड़ने में दिक्कत होती है; बल्कि वहां पर प्रायः निर्भर होनी की प्रणाली की रचना कर दी जाती है।

ङ. पौलुस निम्न कारणों से उन स्थानों को छोड़ पा रहे थेः

१) उन्होंने कभी नियोग के दर्शन को अपनी आंखों से ओझल नहीं होने दिया (अर्थात सुसमाचार से वंचित लोगों तक पहुंचना)।

२) उन्होंने किसी भी कार्य को प्रारम्भ और उसे पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा पर विश्वास किया (फिलि १:६; १ थिस्लु ५:२३, २४; २ थिस्लु ३:३)।

च. उसके वहां ठहरने की तुलना में अधिक सकारात्मक परिणाम उन्हें प्राप्त हुएः

१) सुसमाचार पृथ्वी के सभी ज्ञात स्थानों तक पहुंच पाया (रोमियों १५:१९)।

२) कमज़ोर और निर्भर कलीसियाओं के स्थान पर आत्म निर्भर व मज़बूत कलीसियाओं का निर्माण हुआ।

घ. नियोग के लक्ष्य।

१. नियोग का विशेष लक्ष्य क्या है? उसका अन्तिम परिणाम क्या होगा?

क. प्रेरितों के काम की पुस्तक में उसका अन्तिम परिणाम स्थानीय कलीसिया था।

ख. क्यों?

१) मसीह की देह के आवश्यक कार्यों को करने के लिए स्थानीय कलीसिया के स्थापित होने की ज़रूरत होती है।

२) स्थानीय कलीसिया का स्थापित होना बहुत ज़रूरी है ताकि नियोग से जुड़े कार्य होते रहें।

टिप्पणियाँ -

२. कलीसिया क्या है?

क. जिस बाइबल आधारित उपमा को इस्तेमाल कलीसिया को वर्णन करने के लिए किया गया है वह यीशु और कलीसिया के बीच में एक वास्तविक, जीवित और प्रेम से भरे रिश्ते को दिखाता है।

ख. कलीसिया, मसीह की देह है। इसलिए यह स्वामी के नियोग में आवश्यक भूमिका को अदा करता है।

ग. हमारे भीतर कलीसिया को लेकर एक बाइबल आधारित दृष्टिकोण होना जरूरी है।

१) लौकिक/ऐतिहासिक दृष्टिकोण।

क) लौकिक--कलीसिया वह देह है जो यीशु को दी गयी है। वह लगातार अपने कार्य को करेगी, जो परमेश्वर के राज्य का कार्य है।

ख) ऐतिहासिक--कलीसिया परमेश्वर के लोगों का वह समूह है जिसके द्वारा परमेश्वर ने छुटकारे के सम्पूर्ण इतिहास में कार्य किया है।

२) कलीसिया गतिशील व "करिश्माई" है। यह संस्थागत नहीं है।

क) यह परमेश्वर के अनुग्रह से विद्यमान है। यह अनुग्रह के वरदानों से बनी है और इसे मानव की देह की तरह बनाया गया है।

ख) यह एक समाज है। इसमें कोई वर्गीकरण नहीं है।

ग) यह एक जीव के समान है। यह कोई संस्था नहीं है।

घ) ध्यान दें: १ कुरि १२; रोमियों १२:५-८; इफिसियों ४:१-१६; १ पतरस ४:१०, ११।

३) कलीसिया परमेश्वर के लोगों को समाज है। यह उन लोगों का समूह है जो आपस में संगति करते हैं। उन्हें एक साथ संगति में रहने के लिए संसार से बाहर बुलाया गया है।

क) कलीसिया का मतलब लोग है। हांलाकि कलीसिया की संरचना होती है लेकिन यह कोई एक संस्था नहीं है।

ख) ये लोग अकेले छोड़े गये लोग नहीं हैं। एक समुदाय में रहने वाले लोग हैं।

टिप्पणियाँ -

ग) निर्गमन १९:५,६ की तुलना १ पतरस २:९ से करें। एक लौकिक/एतिहासिक बोध में कहें तो, कलीसिया परमेश्वर के लोग हैं।

घ) एक करिश्माई जीवन के रूप में, कलीसिया पवित्र आत्मा का समाज है। यह ऐसा समूह है जिसमें मसीही लोग मिलकर साथ रहते हैं।

घ. कलीसिया और उनके कर्तव्य (मत्ती २५:१४-३०)।

१) कलीसिया के हाथों में सुसमाचार सौंपा गया है।

२) उसका मूल्यांकन इस आधार पर होगा कि वह सुसमाचार का इस्तेमाल किस तरह से करती है और उसका फल क्या होता है।

V. वैश्विक मसीही आन्दोलन।

क. नियोग का इतिहास।

१. अब हम अध्ययन करना चाहते हैं कि कलीसियाई काल में सुसमाचार किस प्रकार से संसार भर में फैला।

२. हमें इस बात को मानना होगा कि राज्य की बढ़ौत्तरी बहुत बढ़े स्तर पर छुपी रही और उस पर ध्यान नहीं दिया गया (मत्ती १३:३१-३३)। इस कारण जिस प्रकार संसार इतिहास को देखता है, हम उस प्रकार से नहीं देखते हैं। परमेश्वर का राज्य हमेशा प्रगति करता रहा है। लोगों को सुसमाचार सदैव ही सुनाया जाता रहा है।

३. राल्फ विन्टर के द्वारा दिया गया निम्नलिखित आरेख नियोग के ४००० वर्षों के इतिहास को दिखाता है।

क. ध्यान दें कि इसमें १० काल हैं,जिसमें से प्रत्येक काल परमेश्वर के नियोग की योजना के ४०० वर्षों को दिखाता है।

ख. उत्प १-११ में, हम समस्या के प्रारम्भ को देखते हैं जिसके बारे में हम ने पहले भी चर्चा की है।

ग. उत्प १२ में, हम १० युगों के प्रारम्भ को देखते हैं।

घ. १० युगों के ठीक बीच में इस प्रत्याक्रमण की मुख्य घटना है। यह घटना मसीह का जीवन है।

१) मसीह से पहले हम ५ युगों को देखते हैं।

२) मसीह के बाद भी हम कलीसियाई काल के ५ युगों को देखते हैं।

टिप्पणियाँ -

ङ. ध्यान दें कि बहुत से भिन्न तरीके रहे हैं जिनके द्वारा परमेश्वर ने अपने नियोग के उद्देश्य को पूरा किया है।

१) कई बार नियोग के दूतों ने स्वेच्छा से सहयोग नहीं दिया।

२) फिर भी, परमेश्वर की योजना को कभी रोका नहीं जा सकता (अय्यूब ४२:२)।

चर्चा विषय

ध्यान दें कि बहुत से भिन्न तरीके रहे हैं जिनके द्वारा परमेश्वर ने अपने नियोग के उद्देश्य को पूरा किया है।

४००० ई.पू

|

उत्प. १-११

|

२००० ई.पू

समयान्तराल	दस युग	नियोग के दूत	तरीका
२०००-१६००	कुलपति	अब्राहम	स्वेच्छा से जाना
१६००-१२००	मिस्र की गुलामी	याकूब	अनैच्छिकता से जाना
१२००-८००	न्यायियों	इस्राएल	मैत्रिपूर्ण आकर्षण, आक्रमण
८००-४००	राजाओं	निर्वासित यहूदी	मैत्रिपूर्ण आकर्षण, आक्रमण
४००-०	निर्वासन के बाद	छोड़े गये यहूदी	अनैच्छिकता से जाना
यीशु ने आकर उस महान आदेश को नियोगी राष्ट्र (इस्राएल) से ले लिया क्योंकि उन्होंने अपनी आशीषों को दूसरी जातियों के लिए बनने हेतू इस्तेमाल नहीं किया। वह महान आदेश को नए मिश्नरी अर्थात नियोगी राष्ट्र (कलीसिया) को देते हैं। रोमियों ११:१३-२४, मत्ती २८:१८-२० पर ध्यान दें।			
०-४००	रोम	प्रारम्भिक कलीसियाएं	अनैच्छिक/स्वेच्छा से जाना
४००-८००	बारबेरियन्स	साधु/सन्यासी	आक्रमण, अनैच्छिकता से जाना
८००-१२००	वाइकिंग्स	गुलाम	आक्रमण, अनैच्छिकता से जाना
१२००-१६००	सारासेन्स	धर्मयोद्धा, महन्त	स्वेच्छा से जाना
१६००-???	जगत के छोर तक	आधुनिक नियोग	स्वेच्छा से जाना

२००० ई.प

टिप्पणियाँ -

४. दुर्भाग्य से,इस्राएल और कलीसिया में कोई खास अन्तर नहीं है। हम उसी चक्र को यहां भी घूमते हुए देखते हैं।

क. जो आशीषें मिली होती हैं उन्हें दूसरों के साथ साझा नहीं किया जाता है।

ख. उन्हें उनसे छीन लिया जाता है।

१) उदाहरण के लिए, रोमियों ने कभी बारबेरियन्स तक पहुंचने का प्रयास नहीं किया। क्या हुआ?

२) बारबेरियन्स को रोम की आशीषें प्राप्त हो गयीं (भजन ७६:१० के सिद्धान्त को याद रखें-परमेश्वर की श्रेष्ठता में प्रायः विडम्बना होती है)।

ख. रोमी और बारबेरियन्स।

१. रोम वासियों को जीतना (०-४०० ई.प)।

क. यह बात पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि रोम किस प्रकार से मसीही बना।

१) फिर भी, यह बात स्पष्ट है कि मसीहियों का विस्तार महान रोमी नियोग आन्दोलन की वजह से नहीं हुआ था।

२) ज्यादा तक मसीहियत का विस्तार अनैच्छिकता के साथ जाने वाले लोगों के द्वारा हुआ।

३) ३१२ ई.प, कौन्सटैन्टाईन (रोमी सम्राट) ने अपने आप को मसीही घोषित कर दिया। ३७५ ई.प, मसीही धर्म रोम का आधिकारिक धर्म बन गया।

ख. लेकिन, रोमी मसीहियों ने महान आदेश को पूरा करने के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया।

२. बारबेरियन को जीतना (४००-८००)।

क. रोम के मसीही बारबेरियन्स के बीच में सुसमाचार के साथ बहुत कम पंहुच पाए थे।

१) जब बारबेरियन्स ने आक्रमण किया तब उन्हें कम से कम मसीही सिद्धान्तों के बारे में पता था।

२) अतः, वह एक दयालु आक्रमण था और जिसके परिणाम स्वरूप रोम को नष्ट नहीं किया गया।

टिप्पणियाँ -

ख. बारबेरियन्स ने मसीही संस्कृति को अपना लिया।

१) वे मसीही बन गये।

२) उन्होंने मसीहियत को बढ़ाने और शिष्ट समाज का निर्माण करने में योगदान दिया।

ग. लेकिन, उन्होंने महान आदेश को पूरा करने में कोई ध्यान नहीं दिया।

ग. वाइकिंग्स, सारासेन्स, और पृथ्वी की छोर तक।

१. वाइकिंग्स का जीतना (८००-१२००)।

क. बारबेरियन्स ने नियोग पर बल दिया, लेकिन उनकी योजना में उत्तर में बसे वाइकिंस नहीं थे।

ख. इसलिए, वाइकिंग्स ने आक्रमण किया, उन्होंने सबकुछ नष्ट कर दिया, क्योंकि उन्हें मसीही मूल्यों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

ग. बारबेरियन्स मूर्तिपूजकों के पास सुसमाचार नहीं पहुंचा सके। अतः, मूर्तिपूजक उनके पास आये। एक बार फिर से, "अपने कैदियों के विश्वास से विजेयताओं ने विजय हासिल कर ली।"

घ. वाइकिंग्स की चढ़ाई का परिणाम आशीष और दुःखद घटना के साथ हुआ।

१) मसीहीयत फैली।

२) लेकिन, यह फैलाव का कार्य स्वंय सेवकों के द्वारा नहीं हुआ।

२. सारासेन्स का जीतना (१२००-१६००)।

क. धार्मिक सभाओं की "नियोग" एक दुःखद घटना थी। उन्होंने मसीहीयत के फैलाव को बल पूर्वक फैलाने का प्रयास किया। मसीहीयों के इतिहास में इस कलंक ने मुसलमानों को अलग कर दिया।

ख. यह काल एक क्रान्ति के साथ समाप्त हुआ। उसमें एक नए जीवन का बोध था।

ग. वैश्विक स्तर पर विस्तार प्रारम्भ हो गया। स्पेन के जैसे साम्राज्य अपने राज्य का विस्तार करने के लिए पर्यवेक्षकों को भेजने लगे। और मसीहियत उनके साथ साथ आगे बढ़ी।

टिप्पणियाँ -

३. पृथ्वी के छोर तक (१६००-२०००)।

क. १६००-१८००: रोमी कलीसियाओं में महान आज्ञा पर अत्यधिक बल दिया गया।

ख. १८००-२०००: अंततः प्रोटेस्टेंट नियोग के लिए के लिए खड़े हो गये।

ग. गैर-पाश्चात्य देशों में भी कलीसिया का जन्म हो गया। जिस प्रकार से गैर-पाश्चात्य संसार वर्तमान में राजनैतिक तौर पर आधिपत्य जमाने के लिए तैयार है उसी प्रकार से वह आत्मिक तौर पर अपना अधिकार जमाने के लिए तैयार था।

घ. अंतिम काल में विस्तार के तीन युग (विशेष तौर पर १८००-२००० तक)।

१. पहला युग (१७९२-१९१०)।

क. इस युग का प्रारम्भ विलियम कैरी की सेवकाई के साथ हुआ। उन्होंने प्रोटेस्टेन्ट कलीसिया को नियोग के आदेश को प्रतिउत्तर देने के लिए प्रोत्साहित किया।

ख. नियोग के लिए विद्यार्थियों के बीच में आन्दोलन हुए। नियोग की समीतियां प्रारम्भ हुईं।

ग. इस बीच लोगों ने बहुतायत से त्याग किया। जितने भी मिश्नरियों को सुसमाचार से वंचित स्थानों में भेजा गया वे अधिकतर दो वर्षों के भीतर ही मर गये।

घ. समुद्री तटों को ज्यादा निशाना बनाया गया।

ङ. नियोग विशेषज्ञ, नियोग और स्थापित की जाने वाली स्थानीय कलीसिया के बीच में आने वाले भिन्न स्तरों के विकास को परिभाषित करने लगे।

१) प्रवर्तक स्तर - लोगों के समूह से पहली बार मुलाकात।

२) पैतृक स्तर - जिसमें मिश्नरी राष्ट्रीय अगुवों को तैयार करते हैं।

३) सहभागिता का स्तर - जिसमें राष्ट्रीय अगुवे मिश्नरियों के साथ मिलकर बराबरी से काम करते हैं।

४) प्रतिभागिता का स्तर--मिश्नरी इसमें बराबरी के सहभागी नहीं हैं। वे आमन्त्र पर भाग लेने के लिए बुलाए जाते हैं।

च. नियोग में अभ्यास किया जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त तैयार हो गया था। एक मिश्नरी को अपने काम से बढ़कर कार्य करना चाहिए (उसे अगुवाई करने के लिए एक राष्ट्रीय अगुवे को तैयार करना चाहिए, ताकि वह स्वयं आगे बढ़ सके)।

टिप्पणियाँ -

२. दूसरा युग (१८६५-१९८०)।

क. इसका आगमन हडसन टेलर की सेवकाई से प्रारम्भ हुआ। सुसमाचार से वंचित स्थानों के बीच में रहने वाले लोगों पर बल दिया गया। टेलर ने विशेष तौर पर चीन को अपना निशाना बनाया।

ख. वहां के जवानों में (विद्यार्थियों के आन्दोलन में) मिशन फिल्ड अर्थात नियोग के क्षेत्रों में जाने की नयी उमंग थी। अंतर्देशीय क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए मिशन सोसाइटियों को निर्माण हो रहा था।

ग. लेकिन, उनके बीच में एक कदम पीछे भी लिया गया।

१) कुछ नए मिश्नरियों को स्वदेशी सिद्धान्त समझ में नहीं आए और वे राष्ट्रीय अगुवों और पासबानों को बदलने लगे।

२) अन्त में, उन्होंने परिवर्तन किया और वे राष्ट्रीय अगुवों उन जगहों के अधिकार वापस करने लगे। इसके बाद उन्हें बहुतायत से फल प्राप्त हुआ।

३. तीसरा युग (१९३४-?)।

क. समुद्री तटों पर सुसमाचार पहुंच गया। अंतर्देशीय स्थानों में सुसमाचार पहुंच गया। कमरून टाऊनसैंड (केन्द्रिय अमेरिकन भारतीय) और डोनाल्ड मैक्गावरैन (एशिया के भारतीय) छुपे हुए आदिवासियों तक पहुंचने लग गये।

ख. नियोग शाखाएं "छुपे हुए लोगों" को निशाना बनाने लगे।

ग. ऐसा अनुमान लगाया गया है कि (१९४४ तक) ११००० ऐसे लोगों के समूह थे।

घ. यदि इतिहास अपने आप को दोहराए, अफ्रिका, एशियां, और लैटिन अमेरिका की जवान कलीसियाओं को इस "अंतिम सीमा" तक पहुंचने के लिए अत्यधिक सार्थकता के साथ इस्तेमाल किया जाएगा।

निष्कर्ष:

इसके साथ हम वैश्विक नियोग I के अन्त में पहुंच गये हैं, जिसमें नियोग की बाइबल आधारित व ऐतिहासिक नींव के बारे में बताया गया। इस श्रृंखला का अगला पाठ्यक्रम, वैश्विक नियोग II नियोग के आदेश को पूरा करने के लिए योजनाबद्ध आयाम के बारे में बताता है।

टिप्पणियाँ -

वैश्विक नियोग: अंतिम टिप्पणियाँ

[1]जोनाथन लूइस, वैश्विक नियोग - भाग I (पासाडेना, CA (सिए): विलियम केरी संग्राहलयए १९८७) इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा के मुख्य बिन्दू वैश्विक नियोग - भाग I से लिये गये हैं। इसका इस्तेमाल लिखित अनुमति के बाद में किया गया है।

[2]इबिद., फिग. ४.४, पृष्ठ ८६।

[3]इबिद., फिग. ५.१, पृष्ठ १०३।

वैश्विक नियोग I

टिप्पणियाँ -